अक्टूबर 2018, ₹20/-

आई.एस.एस.एन.-2230-7575

सुलभ इंडिया

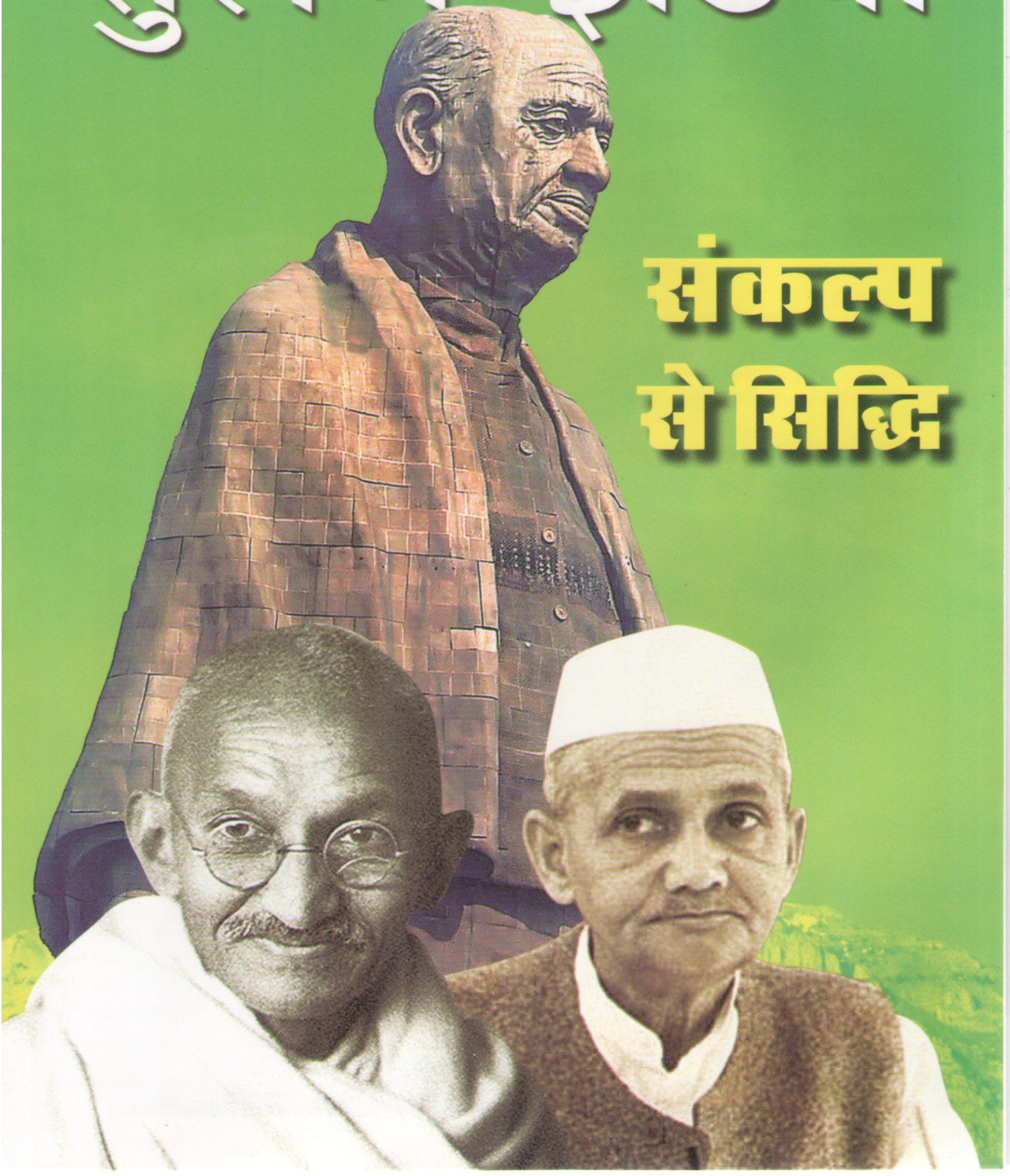

संकल्प से सिद्धि

विशुद्ध आत्म-भाव—करुणा

डॉ. सोहन राज तातेड़

करुणा मानवीय संवेदना का एक ऐसा भाव है, जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा की उत्प्रेरणा बहुत प्रबल होती है। करुणा-भाव किसी राग-भाव का अंग नहीं होकर एक स्वतंत्र आत्म-भाव है। राग-भाव किसी परिचित या चिरपरिचित के साथ ही हो पाता है, किंतु करुणा-भाव के लिए कोई शर्त नहीं है।

राग-भाव तो आत्मा का एक विकार-भाव है, जो त्याज्य है, किंतु करुणा-भाव तो किसी की पीड़ा के साथ सहानुभूति में जगनेवाला आत्मा का एक दिव्य स्वभाव है, यह कदापि हेय नहीं हो सकता। करुणा-भाव कहीं भी, यहाँ तक कि नितांत अपरिचित प्राणी को भी पीड़ा-ग्रस्त देखकर उभर सकता है। करुणा-भाव से ही संवेदना जगती है, व्यक्ति या प्राणी, जो पीड़ित है, उसकी छटपटाहट कभी-कभी द्रष्टा के मन में घोर पीड़ा पैदा कर देती है। कभी-कभी तो करुणाशील व्यक्ति रोते हुए दु:खी प्राणी के साथ स्वयं रोने लगता है। वह दु:खी के दु:ख को अपने-आप में अनुभव करता है। यह संवेदना करुणा-भाव से ही जग पाती है।

करुणा वस्तुत: एक आत्म-भाव है। आर्त-ग्रस्त प्राणी तो निमित्त-मात्र होता है। सरल और सौम्य मानसिकता में करुणा-भाव का निश्चित अस्तित्व है। परमार्थ की आराधना में करुणा-भाव का सर्वाधिक महत्त्व है। सच पूछा जाए तो करुणा के बिना परमार्थ हो ही नहीं सकता। जैनशास्त्रों में करुणा का ही पर्यायवाची शब्द 'अनुकंपा' है। अनुकंपा को संवेदना का पर्याय कह दें तो अनुपयुक्त नहीं होगा। पीड़ा-ग्रस्त प्राणी काँपता है, उसके साथ करुणानिधि मानस भी अनुकंपित होने लगता है। जटायु को तड़पता देख श्रीरामचंद्र जी स्वयं विगलित हो गए। उन्होंने सीता को ढूँढ़ना छोड़ दिया और जटायु की सेवा करने लगे। उन्होंने उस घायल पक्षी को गोद में उठाकर गले लगाया, प्यार से सहलाया। असीम पीड़ा से उसे तड़पता देख श्रीरामचंद्र जी रोने लगे थे। जटायु के साथ राम का हृदय भी काँप रहा था, यह अनुकंपा-भाव शुद्ध आत्म-भाव था। ऐसा भाव किसी भी कोने से राग-भाव नहीं हो सकता।

> करुणा-भाव से ही संवेदना जगती है, व्यक्ति या प्राणी, जो पीड़ित है, उसकी छटपटाहट कभी-कभी द्रष्टा के मन में घोर पीड़ा पैदा कर देती है। कभी-कभी तो करुणाशील व्यक्ति रोते हुए दु:खी प्राणी के साथ स्वयं रोने लगता है। वह दु:खी के दु:ख को अपने-आप में अनुभव करता है। यह संवेदना करुणा-भाव से ही जग पाती है

भगवान् महावीर ने अपने प्रतिद्वंद्वी गोशालक को भी तेजोलेश्या की आग से जलने से बचा लिया था। यह विशुद्ध करुणा-भाव था। करुणा-भाव ही वास्तव में वह भूमिका है, जिसपर सम्यक्त्व, व्रतीत्व, तीर्थंकरत्व, ईश्वरत्व इत्यादि सभी परमार्थ न केवल पैदा होते हैं, अपितु फलते-फूलते हैं। अत: करुणा, सेवा एवं भावात्मकता का संपोषण आवश्यक है। इससे मानवीय संस्कृति अक्षुण्ण रहेगी। ■

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय,
झुंझुनू, राजस्थान